

कृष्पिरा में बढ़ते प्रदूषण पर CAG की रपिर्ट में चत्ता जताई गई

चर्चा में क्यों?

भारत के [नयित्तरक एवं महालेखा परीकषक](#) की रपिर्ट के अनुसार, कई राज्य सरकारी एजेंसियों के हस्तकषेप के बावजूद, कृष्पिरा नदी प्रदूषति बनी हुई है।

मुख्य बदि:

- इसमें बताया गया है क कृष्पिरा उप-बेसनि के कुप्रबंधन और भुजल के दोहन के कारण नदी का प्राकृतकि प्रवाह कम हो गया है।
- इस रपिर्ट में कहा गया है क स्थानीय शहरी नकियाओं का अपशषिट नदी में प्रवाहति हो रहा है।
- औद्योगकि अपशषिट के अपर्याप्त उपचार, नदी तल पर प्रदूषण के कारण कृष्पिरा जल और उसकी सहायक नदियों की गुणवत्ता में गरिवट आई है।
- CAG ने अपनी रपिर्ट में सफिराशि की है क मध्य प्रदेश प्रदूषण नयित्तरण बोर्ड को उद्योगों पर उचति और पर्याप्त नगिरानी सुनश्चिति करनी चाहिये।
- लोक नरिमाण वभिण की रपिर्ट में राज्य में नरिमाणाधीन पुलों के पूरा होने में देरी का उल्लेख कया गया है और कहा गया है क अकतूबर 2020 तथा सतिंबर 2021 के बीच पाँच डविोजनों में जनि 72 नमूना पुलों की जाँच की गई, उनमें से केवल नौ समय पर पूरे हुए थे।

कृष्पिरा नदी

- यह मध्य प्रदेश राज्य की एक बारहमासी नदी है
- इसका उदगम बधिष परवतमाला में काकरी-टेकड़ी नामक पहाड़ी से होता है, जो धार के उत्तर में है और उज्जैन से 11 कमी. की दूरी पर स्थति है।
- यह नदी 195 कमी. लंबी है, जसिमें से 93 कमी. उज्जैन से होकर बहती है।
- यह मालवा पठार से होकर बहती हुई चम्बल नदी में मलि जाती है
- धार्मकि महत्त्व:
 - पुराणों या प्राचीन हदि ग्बंधों में कहा गया है क कृष्पिरा की उत्पत्ति भगवान वषिणु के वराह अवतार के हृदय से हुई है।
 - इसके अलावा कृष्पिरा के तट पर ऋषि सिंदीपनिका आश्रम है, जहाँ भगवान वषिणु के आठवें अवतार कृष्ण ने अधयन कया था।
 - इसका उल्लेख न केवल प्राचीन हदि ग्बंधों में बल्कि बौद्ध और जैन ग्बंधों में भी मलिता है।
 - पवतिर शहर उज्जैन कृष्पिरा नदी के दाहनि कनारे पर स्थति है। प्रसदिध कुंभ मेला इस शहर के घाट पर प्रत्येक 12 वर्ष में एक बार लगता है, जो देवी कृष्पिरा नदी का वार्षकि उत्सव है।
 - इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ खान और गंभीर हैं।